बिहार विधान सभा अध्यक्ष, श्री विजय कुमार सिन्हा का सामाजिक नैतिक संकल्प –पॉच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, वरदानोंसे युक्त तथा सम्मानों से पूर्ण अभियान

लोकतंत्र हमारे लिए एक व्यवस्था भर नहीं है, बल्कि हमारी सामाजिक जीवन की दशा–दिशा के निर्धारण की धुरी भी है । हमारे लोकजीवन में व्यक्ति से समाज का निर्माण और समाज से व्यक्ति का निर्माण एक सतत प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है । संविधान के निर्माता हमारे महान विभूतियों ने इसी विचार को पहचानते हुए व्यावहारिक लोकतंत्र की रूपरेखा सामने रखी । इसमें विधायिका को शासन का ऐसा अंग माना गया जो शासन–प्रशासन को निर्धारित भी करे, नियंत्रित भी करे, संवाद भी करे और समाधान की राह भी दिखाए । शासन को सुशासन में तब्दील करना विधायिका की सबसे बड़ी जिम्मेदारी मानी गई । विधायी निकाय शासन को लोकहित में उत्तरदायी बनाने की शक्ति जनता से प्राप्त करती है । शायद इसीलिए इससे जुड़े जनप्रतिनिधियों को संविधान द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक विशेषाधिकार भी दिए जाते हैं । अतः विधायिका को प्राप्त शक्तियों तथा अधिकारों का नैतिक और व्यावहारिक उपयोग जनसरोकार के लिए हो, यह दायित्व भी कहीं न कहीं विधायी संस्थाओं पर होता है ।

विधायिका सिर्फ विधान बनाये महज यही उसका कार्य नहीं है बल्कि वह जनता के विश्वास पर भी खरा उतरे,यह भी आवष्यक है। अपने आचरण, व्यवहार और कार्यों से समाज का मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक बने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय किया गया कि बिहार विधान सभा भवन के शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक मौके को स्वर्णिम अतीत को याद करने के उत्सव के रूप में मनाने के साथ–साथ उज्ज्वल भविष्य की ललक के अवसर के तौर पर यादगार बनायाजाय । सुखद संयोग है कि इसी समय हम अपनी आजादी का अमृत महोत्सव भी मना रहेहैं । अतः हमारा जनतंत्र शिखरों का आरोहण करे, यह लाजिमी भी है ।

इस गौरवशाली अवसर पर विधान सभा को विधायी कार्यों के साथ–साथ लोकचेतना में नई स्फूर्ति पैदा करने वाली जनोन्मुखी संस्था के रूप में जनमानस के बीच ले जाने कानिर्णय लिया गया । जन–जन से जुड़ने की इस कोशिश ने एक अभियान का रूप ग्रहण कर लिया, जिसे नाम मिला– ''अभिशापों से मुक्त, वरदानों से युक्त और सम्मानों से पूर्ण सामाजिक–नैतिक संकल्प अभियान'' ।

इस अभियान का उद्‌देश्य राज्य के सभी जिलों में जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी के साथ आमजन को 'मुक्त–युक्त–सम्मान' का संकल्प दिलाकर सर्वग्राही, सर्वस्पर्शी और सर्वसमावेशी समाज का निर्माण करना है । हमारे सामाजिक जीवन के सबसे महत्वपूर्ण सोपान परिवार को इस अभियान में लक्षित किया गया है । साथ ही, इस अभियान में युग के वाहक हमारे युवाओं में विधायी कार्य के प्रति अभिरूचि एवं सकारात्मक भाव जगाने के लिए 'बाल–युवा संसद कार्यक्रम' को भी शामिल किया गया है ।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द के कर–कमलों से प्रारंभ हुआ यह अभियान देश के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न राजेन्द्र बाबू की जन्मस्थली से शुरू होकर, बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री 'बिहार केशरी' श्री बाबू की भूमि शेखपुरा और लोकतंत्र की जन्मभूमि वैशाली से होते हुए आज बिहार के सभी नौ प्रमंडलों सहित दस जिलों का सफर तय कर चुका है ।

इस अभियान को अब तक जनभावना और जनसमर्थन का जैसा सम्बल मिला है, वह सचमुच अभिभूत कर देने वाला है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि जब यह जन–अभियान राज्य के सभी जिलों में पहुँच जाएगा, लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति लोक आस्था में सकारात्मक और सार्थक वृद्धि का वाहक बनकर देश में एक प्रतिमान के रूप में याद किया जाएगा ।

पांच सामाजिक अभिशाप से मुक्त

1. हमारा परिवार नशा मुक्त
2. हमारा परिवार अपराध मुक्त
3. हमारा परिवार बाल विवाह मुक्त
4. हमारा परिवार बाल श्रम मुक्त
5. हमारा परिवार दहेज मुक्त

पांच सामाजिक वरदान युक्त

1. हमारा परिवार स्वच्छता युक्त
2. हमारा परिवार योग आयुर्वेद युक्त
3. हमारा परिवार जल संचय युक्त
4. हमारा परिवार प्रकृति युक्त
5. हमारा परिवार विरासत युक्त

पांच सामाजिक सम्मानपूर्ण अभियान

1. हमारा परिवार डिजिटल साक्षर
2. हमारा परिवार स्वरोजगार प्रेरक
3. हमारा परिवार रोजगार सृजनकर्ता
4. हमारा परिवार सामाजिक योद्धा
5. हमारा परिवार सेवा समर्पण दाता

पांच सामाजिक अभिशाप मुक्त अभियान

हमारा परिवार नशा मुक्त

नशा तमाम अपराधों की जननी है। नशा न केवल एक व्यक्ति के स्वास्थ्य को बर्बाद करता है बल्कि उसकी आत्मा के सत्व और बुद्धि को भी विवेकहीन कर देता है। नशा का कोई भी प्रकार व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए हानिकारक है। नशा की वजह से ही समाज में अक्सर अषांति, हिंसा, उपद्रव आदि उत्पन्न होते रहते हैं। व्यैक्तिक व

पारिवारिक हिंसा के लिए भी नषा को जिम्मेवार ठहराया जाता है। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब, चरस, गांजा, गुटखा आदि का नशा स्वास्थ्य की गंभीर समस्या का कारक है। यह लीवर, किडनी, त्वचारोग, क्षयरोग, फेफड़े का रोग, ह्रदयरोग और कैंसर आदि को जन्म देता है। इसके सेवन से केवल एक व्यक्ति ही बर्बाद नहीं होता है बल्कि उसका पूरा परिवार भी उजड़ जाता है। किसी भी सभ्य समाज के लिए नषा कभी ग्राह्य नहीं हो सकता है। अतः सभी प्रकार के नषे का निषेध कर एक पूर्ण नषामुक्त समाज का निर्माण हमारा साध्य होना चाहिए । नशा समाज–राष्ट्र को गुलाम बना देता है । भविष्य को अंधकार के मार्ग पर ले जाकर विकास को अवरूद्ध कर देता है । समय रहते दो–तिहाई युवाओं की आबादी को इस बड़ी बीमारी से मुक्त रखना हम सबों की जिम्मेवारी है ।

- नशा अपराध की जननी है क्योंकि इससे जिन्दगी गुमराह हो जाती है।
- नशा व्यक्ति को धीरे–धीरे नाश की ओर ले जाता है, इससे उत्पन्न रोग के उपचार में कई घर उजड़ और परिवार तबाह हो जाते हैं।
- नशा से सामाजिक परिवेश में भी अषांति फैलती है, अक्सर यह जधन्य अपराधों का कारक होता है।
- नशा युवा वर्ग को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है, जो हमारे राष्ट्र के भविष्य एवं गौरव हैं,खासकर युवा वर्ग नशे के आगोश में जल्द चले जाते हैं जबकि युवा वर्ग ही देश के भविष्य हैं। वर्तमान परिवेश में लगभग दो तिहाई आबादी युवाओं की है, जो युग के वाहक हैं ।
- हमें संकल्प लेना है कि हमारा परिवार नशा मुक्त हो ताकिवर्तमान व आने वाली पीढ़ी को नशे से बचाया जा सके। परिवार के अभिभावकों को भी नषा को 'ना' कर एक आदर्ष उपस्थित करने और इस अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

हमारा परिवार अपराध मुक्त

अपराध समाजिक हो या आर्थिक हो या वैचारिककेवल कानून और व्यवस्था के लिए ही चुनौती नहीं, बल्कि विकास और समृद्धि की भी अवरोधक होती है। हत्या, बलात्कार, लूट, अपहरण, न्यायालय द्वारा दोषसिद्ध भ्रष्टाचारी और देशद्रोही जहां कानून–व्यवस्था के लिए परेषानी के सबब होते हैं वहीं ये अपराधी समाज के लिए भी घृणा के पात्र होते हैं। लोगों के बीच भय, आतंक और निराशा का कारण अपराध है। अपराध सामाजिक हो या आर्थिक, यह न्याय के साथ विकास के अभियान की राह में सबसे बड़ा बाधक है। अपराध अषांति और अस्थिरता का भी कारक होता है। सामाजिक जागरूकता के बिना केवल कानून के जरिए दुनिया के किसी भी समाज में अपराध नियंत्रण का प्रयास सफल नहीं हो सकता है। हर प्रकार के अपराध से मुक्त परिवार द्वारा अपराध मुक्त समाज का निर्माण हमारा सामूहिक लक्ष्य होना चाहिए ।

- अपराध एक प्रवृति है। गलत पालन–पोषण, तनावपूर्ण पारिवारिक व सामाजिक परिवेष तथा मनोविकृति की वजह से कोई व्यक्ति अपराध वृति की ओर प्रवृत होता है। अपराध

को बढ़ावा देने की एक वजह नशा भी है। नषे की स्थिति में होष–हवाष खो चुका व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है। ऐसे में वह आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे बैठता है।

- अपराध पर नियंत्रण केवल कानून के डर से ही संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक जागरूकता भी आवष्यक है।
- आपराधिक प्रवृत्ति के नकारात्मक सोच से समाज में शांति भंग होती है एवं राज्य व देश के विकास में रुकावट पैदा होती है।
- समाज को अपराध मुक्त करने के लिए हम सभी को अपने घर के आगे ''मेरा परिवार अपराध मुक्त है'' लिखना होगा ताकि समाज में एक सकारात्मक माहौल बन सके। जब पूरा समाज अपराध मुक्त होगा, अपराध के विरोध में माहौल बनेगा तो इससे आने वाली युवा पीढ़ी के मन में सदाचार का भाव पैदा होगा कि हमें असामाजिक व आपराधिक कार्य नहीं करना है।
- हमें वैसे काम को अंजाम नहीं देना है जो कानून, नियम, सामाजिक मान्यताओं व लोक–व्यवहार के विरुद्ध हो या समाज जिससे परहेज करता हो।
- अपराध के माहौल में हम विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इसीलिए विकास की ओर कदम बढ़ाने से पहले हमें अपराध मुक्त समाज के लिए संकल्पित होना होगा।
- नई तकनीक का सहारा लेकर समाज के अंदर अफवाह, भ्रम का माहौल पैदा न कर समाज के अंदर सामाजिक सौहार्द्र, शांति और राष्ट्र की सबलता प्रदान करने का प्रयास होना चाहिये।

हमारा परिवार बाल श्रम मुक्त

बचपन इंसान की जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण और यादगार हिस्सा होता है । यही वो वक्त है जब सपनों में रंग भर कर हौसलों की उड़ान से आशातीत सफलता से सजे सुनहरे भविष्य की कहानी लिखी जा सकती है । शायद इसीलिए बच्चे किसी भी देश और समाज के भविष्य कहे जाते हैं । मानव विकास से जुड़े सभी संकेतक यह बताते हैं कि सुरक्षित, संपोषित और संरक्षित बालशक्ति से संभावनामय समाज की संरचना होती है । अतः बच्चों का समुचित लालन–पालन, संरक्षण और शिक्षा हर परिवार और समाज की प्राथमिक जिम्मेदारी है । हमारे संविधान ने भी मूल अधिकारों तथा नीति–निर्देशक तत्वों के माध्यम से एक ठोस रूपरेखा प्रस्तावित की है ।

बालश्रम एक जघन्य अपराध है, इससे शायद ही कोई इनकार करेगा । हमारे देश का कानून भी कड़े प्रावधनों के जरिए इसका प्रतिषेध करता है । बालश्रम के अमानवीय शिकंजे से मुक्त स्वस्थ, सुखी और सुरक्षित बचपन का अधिकार हर बच्चे को दिलाना हम सब का सामाजिक और नैतिक दायित्व है । 'सुरक्षित बचपन संभावनामय समाज' के मंत्र के साथ बालश्रम मुक्त परिवार के निर्माण को एक मुहिम के रूप में बढ़ाने का हर संभव प्रयास हम करें ।

- बाल श्रम राष्ट्र के सबसे कीमती संसाधन पर सबसे क्रूर आक्रमण है।

- बच्चे ही कल युवा होंगे, मगर, जब बुनियाद ही कमजोर होगी तो भविष्य की इमारत कैसे बुलंद होगी? एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में बच्चे सिर्फ सरकार की जिम्मेवारी नहीं, ये समाज के होनहार और राष्ट्र के भविष्य भी हैं।
- बाल श्रम हमारे राष्ट्र को कमजोर तो करता ही है इसके साथ–साथ स्वयं के भविष्य को भी नष्ट कर लेता है ।
- बाल श्रम के कारण मन के अंदर कुंठाजनित हिंसक प्रवृत्ति पैदा होती है, जो किसी भी बच्चे के विकास, हुनर और उसके कौशल को अवरूद्ध करता है। बाल श्रम के कारण समाज में कई कुरीतियां पैदा हो जाती हैं।
- बाल श्रम समाज का विकास, सकारात्मक सोच, बच्चों की मेधा एवं प्रतिभा को नष्ट कर देता है जिसका खामियाजा अन्ततः राष्ट्र व समाज को ही भुगतना पड़ता है।
- हमारे समाज को संकल्पित होना होगा कि हमारा परिवार बाल श्रमिक मुक्त परिवार हो ।

हमारा परिवार बालविवाह मुक्त

किसी भी प्रगतिषील व सभ्य समाज के लिए बाल विवाह एक अभिषाप है। समृद्धि की ओर वही समाज आगे बढ़ सकता है जिसमें नारी गरिमा का भरपूर सम्मान हो। बालविवाह की एक वजह लिंगभेद भी है। आज भी बहुतेरे समाज में लड़कों से लड़कियों को हीन और कमतर समझा जाता है। लड़कियों को बोझ समझने की मानसिकता के कारण भी बाल विवाह को बढ़ावा मिलता है। यह ठीक है कि कानूनन लड़के और लड़कियों की षादी की उम्र निर्धारित है, मगर नासमझी, अज्ञानता, अंधमान्यताओं आदि के कारण आज भी कई ऐसे समाज हैं, जहां बाल विवाह पूरी तरह से निषेध नहीं है। बाल विवाह से न केवल एक बालिका का भविष्य अंधकारमय होता है, बल्कि उसका स्वास्थ्य, जीवन पर भी गंभीर दुष्प्रभाव पड़ता है। किसी भी महिला के लिए परिपक्वता उम्र से पहले गर्भधारण और संतानोत्पति से जहां उसके स्वास्थ्य का क्षय होता है वहीं उत्पन्न संतान भी अक्सर विकृति के षिकार होते हैं। कम उम्र में षादी से एक बालिका को भविष्य सवांरने का मौका नहीं मिलता और पुरुष के साथ बराबरी के संवैधानिक अधिकार से भी वह दूर हो जाती है। शारीरिक के साथ–साथ उसका मानसिक विकास भी अवरूद्ध होता है जिससे हीनता की भावना उसके मन के अंदर उत्पन्न होती है। कुपोषण जनित दिव्यांगता की स्थिति भी झेलनी पड़ती हैं। बाल विवाह जैसी कुप्रथा पर पूरी तरह रोक से ही जनसंख्या नियंत्रण संभव हो पायेगा और बच्चे भी स्वस्थ्य पैदा होंगे। ऐसे में बाल विवाह के अभिषाप से समाज को मुक्त करने का संकल्प सभी को लेना ही होगा।

- बाल विवाह हमारे समाज के लिए सामाजिक अभिशाप और अपराध दोनों है।
- समाज में विशेषता प्राप्त (जनप्रतिनिधि, पदाधिकारी, युवा, व्यापारी, किसान या सामाजिक कार्यकर्ता) अगर संकल्प कर लें कि हमें अपने परिवार और पास–पड़ोस में बाल विवाह नहीं होने देना है, तभी इस अभिशाप से मुक्ति मिलेगी।
- बालविवाह पर प्रभावी रोक से समाज भी स्वस्थ्य रहेगा और राष्ट्र भी मजबूत बनेगा।

- आने वाला पीढ़ी का बेहतर भविष्य बनेगा।
- हम सबको संकल्पित होना होगा की हमारा परिवार बाल विवाह मुक्त परिवार हो।

हमारा परिवार दहेज मुक्त

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' यानी जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता का वास होता है। परन्तु दहेज की प्रथा नारी के सम्मान को ठेस पहुंचाता है। विवशता में लोग बाल विवाह और बेमेल विवाह की ओर प्रेरित होते है। दहेज दानव की वजह से ही अनेक नवयुवतियों को असमय मौत को गले लगानी पड़ती है।दहेजजनित हत्याएं सिहरन पैदा करती हैं। दहेज का दानव लालच की कोख से उत्पन्न होता है। इस भयावह सामाजिक समस्या पर केवल कानून से नियंत्रण संभव नहीं है। जनजागरूकता के साथ ही बेटियों को भी दहेज के खिलाफ सषक्त करने की जरूरत है ताकि वे खुद षिक्षित, सषक्त होकर दहेज लोलुपों को इनकार कर सकें। अब कई ऐसे उदाहरण सामने आ भी रहे हैं, जब षिक्षित व आर्थिक रूप से स्वावलम्बी लड़कियां दहेज मांगने वाले लड़के और उसके परिवार से रिष्ता जोड़ने से इनकार कर रही हैं। मगर इसके लिए लड़कियों को सषक्त बनाने के साथ ही समाज को भी जागरूक होने की जरूरत है। हम सभी जनप्रतिनिधियों को 'दहेज न लेंगे, ना देंगे' का संकल्प लेना चाहिए।

- दहेज प्रथा से समाज में बेटा और बेटी के बीच भेदभाव पनपता है।
- लड़का हो या लड़की है ये तो ईश्वर का उपहार है, इसमें हम भेदभाव करने वाले कौन है?
- जब तक समाज दहेज प्रथा से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं होगा तब तक शक्ति की उपासना और शक्ति की भक्ति अपूर्ण रहेगी। धर्म, समभाव का संदेश देता है, बराबर का अधिकार देता है। लिंगभेद माता का आंचल और पिता की गोद से उत्पन्न नहीं होता है।
- दहेज के कारण अपने बनने वाले परिवार को ही हम कर्जदार बनाते है और सुख को दुख में बदल देते हैं।
- दहेज देने वाला परिवार कर्ज लेकर और जमीन बेचकर दहेज दे तो देता है लेकिन वह मानसिक रूप से प्रताड़ित एवं कुंठित हो जाता है। खुशी से दिया गया उपहार आशीर्वाद है परन्तु दबाव से लिया गया उपहार अभिशाप है। इससे संबंध नकारात्मकता में बदल जाता है।
- दहेज की कुप्रथा पैसे की लालसा के साथ–साथ सामाजिक दिखावे का भी बहुत बड़ा कारक है।
- दहेज मुक्त समाज के लिए अपनी बहु को अपनी बेटी समझने की सोच विकसित करनी होगी।
- हम सबको संकल्पित होना होगा की हमारा 'परिवार दहेज मुक्त परिवार' है।

पाँच सामाजिक वरदान युक्त

हमारा परिवार स्वच्छता युक्त

स्वच्छ मन+स्वच्छ परिवेश=स्वच्छ समाज। अर्थात जहां स्वच्छता होगी तभी मन, परिवेष और समाज स्वच्छ होगा। किसी भी कार्य की सिद्धि स्वच्छ परिवेष और मन से ही संभव है। कहा भी गया है कि 'यत्र शुचिताः च स्वच्छतां, तत्र तिष्ठष्यारोग्य वैभवञ्च सुखम्।' यानी स्वच्छता और पवित्रता से आरोग्य, संपदा और सुख की सिद्धि होती है। आरोग्यता का भी सीधा संबंध स्वच्छता से है। गंदगी जहां रोग का कारक होता है वहीं स्वच्छता स्वास्थ्य प्रदान करने वाला होता है। भारतीय संस्कृति में स्वच्छता का महत्व काफी पहले से प्रतिपादित है। महात्मा गांधी ने स्वच्छता के महत्व को समझा और इसके लिए सघन अभियान भी चलाया था। अपने आश्रमवासियों के लिए उन्होंने स्वच्छता के नियम तय किये थे। खुले में षौच निषेध का नियम सबके लिए बाध्यकारी था। मलीन बस्तियों में तरह–तरह की बीमारियों की रोकथाम के लिए ही उन्होंने स्वच्छता का मंत्र दिया था। अभी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा षुरू किया गया स्वच्छता अभियान गांधी के अधूरे सपने को पूरा करने की ओर ही बढ़ाया गया एक कदम है। स्वच्छाग्रह के सत्याग्रह को एक जन–आंदोलन के रूप में बढ़ाना हमारा सामूहिक कर्त्तव्य है ।

- स्वच्छता स्वर्ग की पहली सीढ़ी है, स्वच्छता स्वास्थ्य का द्वार है।
- गन्दगी से गरीब, कमजोर तबका ही नहीं सभी की जिन्दगी बदहाल हो जाती है।
- गंदगी महामारी का रूप लेकर समाज को खोखला तथा राष्ट्र को कमजोर कर देती है।
- गन्दगी से लोग बीमार पड़ते हैं और अनावश्यक आर्थिक खर्च बढ़ता है जिससे विकास और कार्यक्षमता प्रभावित होती है।
- स्वच्छता हमारे समाज और संस्कृति का आइना है, इसे जारी रखना हम सब की जिम्मेवारी है।
- स्वच्छता मानव समाज का स्वभाविक गुण होना चाहिए। इधर–उधर कूड़ा–कचरा नहीं फैलाएं और इसे अपनी आदत बनायें।
- स्वच्छता विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव के सरलतम उपायों में से एक है। गरीबी से मुक्ति में यह वरदान है।
- स्वच्छता सुखी जीवन की आधारशिला है।
- साफ–सुथरा रहना मनुष्य का प्राकृतिक गुण है, जो विचारों को देवत्व की ओर ले जाता है और सकारात्मक ऊर्जा से पूर्ण करता है।
- स्वच्छता युक्त समाज से बीमारी मुक्त समाज बनाना हम सभी का कर्तव्य है।
- हम संकल्प लें कि स्वच्छता युक्त हमारा परिवार और स्वच्छता युक्त हमारा समाज हो। गांधी जी के सपनों को साकार करना, प्रधानमंत्री जी के अभियान को मजबूती प्रदान करना हम सभी की जिम्मेवारी है। स्वच्छता 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' की पहचान बनाना और 21वीं सदी में भारत को विश्व गुरु बनाने का पहला कदम है।

हमारा परिवार योग आयुर्वेद युक्त

'योग' शब्द अपने आकार में जितना छोटा है, उसके अर्थ और प्रभाव का फलक उतना ही व्यापक है । शायद इसीलिए विभिन्न मतों को मानने वाले इसे अलग–अलग रूप में पारिभाषित करते हैं । योग के बारे में प्रचलित अलग–अलग धारणाओं का निचोड़ यह है कि योग अपनी चित्तवृत्तियों को नियंत्रित कर स्वयं को आदिशक्ति से जोड़ने का जरिया है । योग को लेकर सर्वाधिक प्रचलित महर्षि पतंजलि का दर्शन इसे आठ क्रियाओं के समाहार के रूप में विश्लेषित करता है । 'अष्टांगिक योग' के इस सूत्र के अनुसार यम यानी सिद्धांत, नियम यानी व्यक्तिगत अनुशासन, आसन यानी मुद्राएँ, प्राणायाम यानी श्वास पर नियंत्रण, प्रत्याहार यानी संवेदना, धारणा यानी एकाग्रता, ध्यान यानी मानसिक स्थिरता और समाधि यानी प्रबोधन का समुच्चय योग है ।

योग से व्याधियों एवं विकारों से मुक्ति तो मिलती है, साथ ही हमारे मन, वचन और कर्म में भी गुणात्मक सुधार होता है । आयुर्वेद भी ज्ञान, ध्यान और व्यवहार की हमारी संचित परंपरा से निकली एक अचूक चिकित्सा पद्धति है । इस चिकित्सा पद्धति में व्यक्ति और परिवेश के बीच एक सहसंबंध पर बल दिया जाता है । आज दुनिया जिस 'वन हेल्थ' के सिद्धांत को अपनाने की बात कर रही है, वह योग और आयुर्वेद की हमारी दार्शनिक मान्यताओं द्वारा सदियों पहले प्रचलित और प्रमाणित किया जा चुका है ।

- योग श्वसन की नियमबद्ध प्रक्रिया है, वहीं आयुर्वेद स्वास्थ्य रक्षा की उत्कृष्ट चिकित्सीय प्राविधि है।
- योग और आयुर्वेद मेधा शक्ति को बढ़ाता और रोग मुक्त कराता है।
- योग मानसिक एकाग्रता सिखाता है, जो विज्ञान के गुप्त रहस्य को खोलता है।
- योग एवं आयुर्वेद के कारण हमारे शरीर पर कृत्रिम रसायन का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- योग से न केवल मांसपेशियां लचीली होती हैं, बल्कि शरीर में प्राणशक्ति बढ़ती है और आंतरिक अंगों में सुदृढ़ता आती है।
- योग से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और तनाव से मुक्ति मिलती है। योग महामारी से भी बचाता है, परिवार और समाज को भयमुक्त बनाता है।
- योग से शारीरिक ऊर्जा लंबी उम्र तक बनी रहती है। सकारात्मक ऊर्जा से रचनात्मक विकास के कार्य को मूर्तरूप मिलता है । वहीं आयुर्वेद हमारे ऋषि–मुनियों के सदियों के षोध का नतीजा है।
- योग आयुर्वेद विश्व की मानव जाति को निकट लाता है, भारत की पहचान बढ़ाता है और विश्व गुरु बनाने के पथ को प्रषस्त करता है।
- हमारा परिवार योग युक्त परिवार हो, ऐसा हमें संकल्प लेना है ।

हमारा परिवार जल संचय युक्त

"जल ही जीवन है।"
"जल है तो कल है।"

कहते हैं– "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सुन/ पानी बिना न उबरे मोती मानुष चुन" । इस सुक्ति का जितना सूक्ष्म महत्व आम जीवन में है, उससे कहीं ज्यादा इसकी व्यावहारिक प्रासंगिकता भी है । जल हमारे जीवन का आधार है, यह तो निरापद है ही हमने इसका दुरपयोग और बेतरतीब दोहन किया है, यह भी कटु सत्य है । जल संकट की भयावह तस्वीरें आए दिन हमें हताश और परेशान करती हैं । दुनिया की दो तिहाई से ज्यादा हिस्सा जलजनित संकट से आज जुझ रहा है । मानवता को जल संकट के इस आसन्न खतरे से यदि बचाना है, तो जल संरक्षण के विचार को व्यवहार में बदलना ही होगा । देश और समाज के हर हिस्से में यह भाव पैदा करना होगा कि– "पानी है तो रवानी है, इसके बिना जीवन की नहीं कोई कहानी है" ।

- जल का संरक्षण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पर्यावरण की रक्षा चक्र को मजबूती देता है।
- जल का संरक्षण करने का अर्थ है कि हमें जल की आपूर्ति का बुद्धिमानी से उपयोग करना और जिम्मेदार होना है।
- जल की जरूरत हमें और हमारी पीढ़ी को आजिवन है, इसलिए इसको बचाने के लिए वर्तमान में केवल हम ही जिम्मेदार हैं।
- गांव के स्तर पर लोगों के द्वारा बरसात के जल को इकट्ठा करने की शुरुआत करनी चाहिए। उचित रख–रखाव के साथ छोटे या बड़े तालाबों को बनाकर बरसात के जल को बचाया जा सकता है।
- आगे जिंदगी को ले जाना है, आगे जिंदगी जीना है, भावी पीढ़ी को कुछ उपहार में देना है, तो जल संचय करके दें जैसे हमारे पूर्वजों ने हमें दिया।
- हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा जल जीवन अभियान को बिहार में नयी पीढ़ी को दिया है, इस संकल्प को साकार करना है। राज्य के अंदर माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा जल–जीवन–हरियाली अभियान में सबकी सहभागिता सुनिष्चित करना, लोगों को जागरुक करना हमारा कर्तव्य है।
- हमें संकल्पित होना होगा कि हमारा परिवार जल संचय युक्त परिवार हो।

हमारा परिवार प्रकृति युक्त

प्रकृति और मानव के बीच शाश्वत संबंध की धारणा हमारे यहाँ सदियों से रही है। प्रकृति के साथ जुड़कर जीना हमारी जीवनशैली का हिस्सा रहा है ।प्रकृतिविहीन जीव की कल्पना नहीं की जा सकती है। यह प्रकृति केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि तमाम जीवों के लिए है। 'स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः, पिबन्ति नाम्भः स्वयमेव नद्यः' अर्थात वृक्ष अपना फल स्वयं न खाते और न ही नदी अपना जल स्वयं पीती है। प्रकृति का यह अवदान

मानव को उपहार में मिले हैं। ये हमें जहां दूसरों के लिए जीने की कला सीखाते हैं वहीं परमार्थ का उत्कृष्ट संदेष भी देते हैं। हमारी संस्कृति में तो प्रकृति के कण–कण को पूजने की परम्परा रही है। नदी, पेड़, पहाड़, पषु–पक्षी सभी की हम सदियों से पूजा करते आ रहे हैं, क्योंकि हमने अपने पूर्वजों से सीखा है कि प्रकृति है तभी जीवन है। हमारा षरीर भी प्रकृति के पांच उपदानों से ही बना है। लेकिन अपने लालच और स्वार्थ के लिए हमने प्रकृति का असंतुलित दोहन किया है । प्रकृति के उपहारों को महज उपभोग के उपादान समझकर हमने आपदा और आपात को आमंत्रित किया है । प्रकृति विमुख सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित कर सतत और समावेशी पर्यावरण का विकास आज जन–जन का दायित्व है ।हमारे संविधन के नीति–निर्देशक तत्व एवं मौलिक कर्त्तव्य में भी प्रकृति के संरक्षण को एक जरूरत माना गया है । इस जरूरत को आज यथार्थ के धरातल पर उतारना एक अनिवार्यता है । इसी भाव और स्वभाव को ग्रहणकर हर परिवार को प्रकृति युक्त बनाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है ।

- प्रकृति ही शक्ति है, शक्ति ही भक्ति है, भक्ति ही सेवा है और सेवा ही धर्म है।
- प्राकृतिक वनस्पति ही हमें जिंदा रखती है।
- प्रकृति ही तो जीवन का आधार है, हमारी जिंदगी सदा से इसी प्रकृति पर निर्भर है।
- प्रकृति का सम्मान राष्ट्र का उत्थान है।
- प्रकृति के सम्मान में घर के अंदर हमें एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। खुली जमीन,घर के अंदर–बाहर, नहीं हो तो छत पर या गमले में पौधे लगाएं।
- हम सभी सालगिरह जैसे शादी और जन्मदिन पर या हमारे घर में जब कोई विशिष्ट व्यक्ति आते हैं तो उनसे एक पौधा लगवाएं। एक पेड़ नष्ट होता है तो दूसरा पेड़ लगाकर उसकी प्रतिपूर्ति करें।
- प्रकृति के सम्मान से ही हरा भरा वातावरण बनेगा, जो हमारे मन मस्तिष्क के अंदर सकारात्मक भाव पैदा करेगा। इसीलिए पेड़ों को कटने से बचाएं, नदियों को दूषित नकरें। अनियंत्रित और असंतुलित खनन से बचें, प्रकृति के तमाम उपादानों का सम्मान करें।
- हमारा परिवार प्रकृति युक्त परिवार हो ऐसा संकल्प लें।

हमारा परिवार विरासत युक्त

हमारे परिवार की पहचान जिस व्यक्ति से होती है, वह हमारे परिवार की सबसे बड़ी विरासत है।हमारे शास्त्रों में कहा गया है– नमन्ति गुणिनो जनाः यानी गुणी लोग पूजे जाते हैं । ये गुणवान लोग अपने साथ–साथ अपने परिवार और समाज के लिए भी यशस्वी होते हैं । इनका परिवार और समाज इनसे जाना जाता है । आगे चलकर ये उस परिवार और समाज की विरासत के अंग बन जाते हैं । हर परिवार में गौरव और मान बढ़ाने वाले ऐसे गुणी और यशस्वी लोग हों, यह प्रयास होना चाहिए । जब एक परिवार ऐसे प्रतापी व्यक्ति से युक्त होगा तो देश और समाज स्वतः सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ेगा । यह हमारी जिम्मेवारी है और विरासत का सम्मान ही हमारी संस्कृति और सभ्यता की पहचान है।

अपनी विरासतों को संरक्षित करने वाले परिवार ही समाज और राष्ट्र की धरोहर है।जो व्यक्ति या समाज अपने धरोहरों का विस्मरण कर देता है वह खुद भी एक दिन खत्म हो जाता है। धरोहरों के जरिए ही हमें निज गौरव का अहसास होता है। विरासत ही हमारी जड़ें होती है, अगर इसे हम विस्मृत करेंगे तो हम जड़विहीन हो जायेंगे। ऐसे में हमें अपनी विरासतों को संजोने और उससे जुड़ने की जरूरत है। हाल के हमारे अनुभव बताते हैं कि हमने अपनी गौरवषाली विरासत की ओर पीठ कर लिया है । षायद इसीलिए देष और दुनिया को प्रेरित करने वाली हमारी वह उज्ज्वल विरासत कहीं न कहीं ठहर सी गई है । हमें इस ठहराव के कारण में नहीं उलझना है, बल्कि अतीत और विरासत के सुनहरे प्रसंगों से प्रेरणा लेकर भावी भारत के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करना है । इसी संकल्प के साथ हर परिवार को अपनी प्रतिभा, परिश्रम और पुरुषार्थ से पीढ़ियों को प्रेरित करने वाले व्यक्तित्व की विरासत से युक्त करने की सामूहिक जिम्मेदारी निभानी है ।

- विरासत आपके मन के अंदर हमेशा ही गौरवशाली परिवार, समाज और राष्ट्र बनाने की प्रेरणा देती है।
- विरासत का सम्मान करना चाहिए तथा उसे संरक्षित रखना चाहिए।
- परिवार में कोई पहचान कराने वाला व्यक्ति नहीं रहा है, तो आप विधायिका के कार्य कर रहे हों, कार्यपालिका के कार्य कर रहे हों, सामाजिक कार्य कर रहे हों, धार्मिक कार्य कर रहे हों, सामाजिक परंपरा और संवैधानिक नियम का पालन करते हुए आप अपने परिवार की विरासत बनें।
- आप पर परिवार के लोगों को नाज हो, समाज गौरवान्वित हो इस संकल्प को पूरा करना है और हर विधान सभा क्षेत्र के अंदर हर परिवार की विरासत की पहचान और प्रदर्शनी का माहौल बने ताकि युवा पीढ़ी में एक सकारात्मक सोच कायम हो।
- समाज के हर एक व्यक्ति के मन के अंदर यह भाव उत्पन्न हो कि हम अपने परिवार की सबसे बड़ी विरासत बनें और हमारी पहचान हमारे परिवार को आत्मीय सुख दे।
- आपका यही संकल्प परिवार को, समाज को और राष्ट्र को गौरव प्रदान करेगा और हम सब मिलकर हर परिवार और समाज के बीच में इस अभियान के लिए प्रेरक बनें।
- अपने और अपने परिवार द्वारा अपनी विरासत को सुरक्षित रखने का संकल्प लें।

पांच सामाजिक सम्मानपूर्ण अभियान

हमारा परिवार डिजिटल साक्षर

डिजिटलीकरण आज केवल विज्ञान द्वारा उपलब्ध करायी गई सुविधा तक सीमित नहीं रह गया है । यह आज सूचना, संवाद, शिक्षा, समृद्धि और संस्कृति का निर्धारक बन गया है । जीवन के हर क्षेत्र में इसकी उपयोगिता आज महसूस की जा सकती है । ऐसे कालखंड में अब व्यक्ति और परिवार का साक्षर या शिक्षित होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि

उसका डिजिटल साक्षर होना भी आवश्यक हो गया है । इसी तथ्य की पहचान करते हुए भारत सरकार द्वारा 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम की शुरूआत हुई । 'सशक्तीकरण को शक्ति' के सूत्र वाक्य के साथ इस भारत के जन–जन तक ले जाने के प्रयास किये जा रहे हैं । कोरोना महामारी के अभूतपूर्व दौर ने इसकी प्रासंगिकता को बार–बार सिद्ध किया । ऐसे में हमारे समाज का कोई परिवार डिजिटल निरक्षर न रह जाय, यह हम सभी का प्रयास होना चाहिए । संवाद, सम्पर्क डिजिटल मार्केटिंग का आधार बने। आजकल कितना भी पढ़ा–लिखा व्यक्ति अगर डिजिटली साक्षर नहीं है तो व 'अपनढ़' के समान है। आज जमीन–जायदाद, रुपये–पैसे के लेन–देन, चिकित्सा, वोटर कार्ड, आधार कार्ड, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, परीक्षा फल, संवाद, खरीद–बिक्री, व्यापार, बाजार भाव के लिए ऑलनाइन सिस्टम की जानकारी आवश्यक है। इसीलिए आज के दौर में डिजिटल साक्षर होना अतिआवश्यक है। डिजिटल साक्षरता को सामाजिक सशक्तीकरण की एक अहम जरुरत मानकर हर परिवार को आच्छादित करने का संकल्प लेना है ।

- डिजिटल साक्षर नए युग में प्रवेश का आधार है।
- हर परिवार अगर अपने परिवार के सदस्यों को डिजिटल साक्षर घोषित कर दे, तो घर बैठे अपनों के साथ जुड़ा जा सकता है।
- संकल्प लें कि परिवार में कोई डिजिटल अनपढ़ न रहेगा, सभी डिजिटल साक्षर बनेंगे।
- ऑनलाइन सिस्टम पर काम करने के लिए डिजिटल साक्षर होना आवश्यक है। संभावना, डिजिटल अर्थव्यवस्था के इस दौर में रोजगार के नये अवसर युवाओं को मिले इसलिए डिजिटल साक्षर आवश्यक है।
- ये 21वीं सदी के भारत का एक सफल और नया अभियान है।
- इस नए ज्ञान को हम सभी को अपनाना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा लोगों तक
- पहुंचाना चाहिए। हमारे संकल्प से ही 'डिजिटल इंडिया' का अभियान सफल होगा।

हमारा परिवार स्वरोजगार प्रेरक

जिस परिवार में कोई बेरोजगार न हो, सभी स्वरोजगार कार्य में लगे हों, वह परिवार सम्मान के अधिकारी हैं। ऐसा परिवार समाज के प्रेरक हैं। स्वरोजगार 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान का अभिन्न हिस्सा है। स्वरोजगार से न केवल हम सम्मान अर्जित करते हैं बल्कि आत्मनिर्भर भी बनते हैं। आर्थिक आत्मनिर्भता से ही व्यक्ति और परिवार के जीवन में सुख–समृद्धि आती है। जब एक व्यक्ति स्वरोजगार से जुड़ता है, तो उसके साथ अन्य कई लोगों को भी रोजगार मिलता है। नए और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए यह जरूरी है।

- अगर कृषि के क्षेत्र में देखें कि भारत की 65 प्रतिशत और खासकर बिहार की 85 प्रतिशत आबादी कृषि पर आधारित है।

- कृषि स्वरोजगार के लिए सबसे बड़ा प्लेटफार्म है जैसे नगदी, फसल, मखाना, मछली पालन, बकरी पालन, एथनोल बनाना आदि।
- कृषि के माध्यम से लघु कुटीर उद्योग का एक जाल बिछ सकता है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति उन्नत होगी।
- कृषि पर आधारित लघु कुटीर उद्योग के कारण रोजगार का सृजन हो सकता है।
- हमारे पास प्राकृतिक वरदान भी है और भरपूर मानव संसाधन उपलब्ध हैं। लघु, कुटीर उद्योग के माध्यम से हमारे देश के अंदर खिलौना, पटाखा, अगरबत्ती, मोमबत्ती और बहुत सारी वस्तुएं बनाकर बेची और समाज की जरूरतें पूरी की जा सकती हैं।
- लघु कुटीर उद्योग के माध्यम से बिहार के गांवों के अंदर के सामान (गुणवत्ता के साथ) देश और दुनिया में बेच सकते हैं।
- स्वरोजगार का ज्ञान बांटने से बढ़ता है और आत्मीय सुख प्रदान करता है।

हमारा परिवार रोजगार सृजनकर्ता

जिस परिवार का हर सदस्य रोजगार में लगा है और अन्य लोगों के लिए भी रोजगार का अवसर प्रदान करता है वह परिवार सम्मान के अधिकारी हैं। आज के भौतिकवादी युग में रोजगार का सीधा संबंध सम्मान से है। रोजगार से जुड़ा व्यक्ति न केवल अपनी जरूरतों को पूरा करता है बल्कि देष के विकास में भी उसका योगदान होता है। रोजगार का सृजन करने वाला परिवार समाज को जहां बेरोजगारी के अभिषाप से मुक्त करता है वहीं देष के उन्नयन व विकास में भी योगदान करता है। ऐसे लोग वाकई सम्मान के अधिकारी है।

- समाज के अंदर यह भाव उत्पन्न करने की जरूरत है कि जो रोजगार सृजनकर्ता है, वह आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति का वाहक है । अतः ऐसे रोजगार सृजनकर्ता को सम्मानित करें।
- रोजगार सृजनकर्ता से लोग प्रेरणा प्राप्त करें ।
- रोजगार सृजनकर्ता का सम्मान समाज करेगा जिससे नौजवानों के मन के अंदर यह भाव जागेगा कि मैं भी कुछ लोगों को रोजगार दे सकता हूं क्योंकि समाज और राष्ट्र को आर्थिक मजबूती प्रदान कर 21वीं सदी की ओर ले जाने के संकल्प को पूरा करने का सौभाग्य मिल रहा है।
- अगर नए उपक्रम शुरू करके नयी सोच के साथ आप कोई काम करें और समाज के नौजवानों को रोजगार देकर कई परिवारों को रोटी के साथ सम्मान से जीने का अधिकार दें तो आप केवल उन नौजवानों के ही नहीं बल्कि समाज के भी अग्रदूत बनेंगे। समाज सम्मान से आपका अभिनंदन करेगा।

हमारा परिवार सामाजिक योद्धा

हमारे यहाँ परोपकार को सबसे बड़ा पुण्य और सेवा को सबसे बड़ा धर्म माना गया है । इन मूलमंत्रों के साथ जीने वाले 'सामाजिक योद्धाओं' को हमारा समाज अपने नायक के रूप में पूजता भी आया है । परहित में ही व्यापक मानवीय हित को देखने की धारणा ने हमारे मानवता को धर्म और इसे व्यावहारिक रूप से साकार करने वाले लोगों को महापुरुषों की संज्ञा दी है । इतिहास में कई मौके आए हैं, जब इन सामाजिक योद्धाओं के पराक्रम से मानवता ने आपदा में अवसर की राहें बनाई है ।

हमारे देश में भी सामाजिक कार्य में जुटे तपस्वियों ने अक्सर कर्त्तव्य का दीया जलाकर समाज को संकटों से उबारा है । विगत दिनों कोरोना महामारी में ऐसे सामाजिक योद्धाओं ने जनसेवा के जो प्रतिमान गढ़े हैं, उसे शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता है । हम समाज के लिए जीने वाले ऐसे निष्ठावान कर्मवीरों के लिए अपना सम्मान और सौहार्द्र अर्पित करें, यह हमारा सामूहिक दायित्व है । जिन परिवारों से ये जुड़े हैं, उन परिवारों के प्रति भी हमें आभारी होना चाहिए । ताकि आने वाले वक्त में ऐसे सामाजिक योद्धा और उन योद्धाओं को गढ़ने वाले परिवार हमारे बीच मानव धर्म की प्रेरक तस्वीर पेश करते रहें । हमारा प्रयास यह भी हो कि हर परिवार से एक सामाजिक योद्धा निकले और समाज हित में अपना सार्थक योगदान दे ।

- सामाजिक योद्धा पूरे समाज के लिए एक कवच की तरह कार्य करते हैं।
- जो समाज के लिए अपना तन–मन–धन अर्पित कर चुका है, जो अपना त्याग, तपस्या और बलिदान देकर समाज के लिए जीता हो उनका तो सम्मान करना ही चाहिए।
- हमारे सैनिक सीमा पर अपने परिवार को छोड़कर अपने सुख को त्यागकर देश की सुरक्षा कर रहे हैं।
- सर्वप्रथम समाज के अंदर युग का वाहक युवा वर्ग ही इससे निपटने का बीड़ा उठाते हैं। ऐसे सामाजिक योद्धाओं का सम्मान आवश्यक है। ऐसे लोगों का जब हम सम्मान करेंगे तो समाज में एक सकारात्मक माहौल बनेगा और इससे हमारे नौजवानों को प्रेरणा मिलेगी।
- चाहे हमारे सिपाही हों, कर्मचारी और स्वास्थ्यकर्मी हों, स्वच्छताकर्मी हों, सरकारी कर्मी हों, सामाजिक कार्यकर्ता हों, धार्मिक कार्यकर्ता हों, कहीं न कहीं समाज के अंदर एक सकारात्मक वातावरण बनाने के लिए, समाज के उत्थान के लिए वे काम करते हैं उनका सम्मान आवश्यक है। इसीलिए तो कहा गया है–

***"अपने लिए जीना एक कहानी है
औरों के लिए जीना एक जिंदगानी है।"***

हमारा परिवार सेवा समर्पणदाता

जिस परिवार के सदस्य दूसरे के संकट में, आपदा में, बीमारी में, शिक्षा में, शादी अन्य जरूरतों को पूरा करने के कार्य में मददगार बनते हैं, वह परिवार सम्मान का अधिकारी है। ऐसे परिवार को समाज के सामने लाने की जरूरत है ताकि दूसरे भी उनसे

प्रेरणा ग्रहण कर सकें। हमारा समाज सदैव सहयोग, सद्भाव और सहकार पर अवलम्बित रहा है। सामाजिक सहजीवन का आदर्ष भी यही है कि हम अपने सामर्थ्य से दूसरों को भी समर्थवान बनाएं। यही भाव तो पषु और मानव के बीच अंतर करता है। सेवा भाव से न केवल हम समाज के दूसरे लोगों का भला करते हैं बल्कि स्वयं भी आत्मिक सुख और षांति प्राप्त करते हैं। इसीलिए तो समाज के आंतरिक संचालन में सेवा समर्पणदाताओं की आदिकाल से महत्वपूर्ण भूमिका रही है। व्यक्ति भले न रहे मगर दानी व समर्पणदाताअें की कीर्त्ति सदियों तक अमर रहती हैं। समाज ऐसे लोगों को कभी नहीं भूलता है।

- सेवा समर्पणदाताओं के कारण आज अनेक शहरों में,धर्मशालाएं हैं, कुआं हैं, ताल–तलैया है, अस्पताल हैं, मंदिर हैं, मस्जिद हैं, मठ और गुरुद्वारे हैं जो समाज सेवा में जुटे हैं।
- आज कई ऐसे समर्पणदाताओं के कारण ही समाज के उन वंचित लोगों को अवसर मिलता है जो अभाव में है या आर्थिक रूप से कमजोर हैं। सेवा समर्पणदाताओं के कारण वे भी समाज में हिस्सेदारी और भागीदारी निभाते हैं ।
- सेवा समर्पणदाताओं के कारण लोग एक–दूसरे की आवश्कताओं के पूरक होते हैं।
- समर्पणदाता व्यक्ति या परिवार एक कड़ी के रूप में पूरे समाज को जोड़ता है और जनमानस के अंदर अपनत्व का भाव पैदा करता है। ऐसी दानषीलता की भावना फिर से जागृत करने की जरूरत है ।
- हजारों वर्षों की गुलामी, अपराध, आतंक, धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा से पैदा हुए गतिरोधों ने दाता के भाव को क्षीण किया है। ऐसे दानदाताओं का सम्मानित कर फिर से मानव जाति के हित में, समाज, राष्ट्र के हित में उन्हें उभारने की जरूरत है ताकि समाज के अन्य समर्थ लोग भी प्रेरणा ले सकें।

विशेष अभियान–प्रतिभा का सम्मान राष्ट्र का उत्थान

नदियों और वीरों का मूल नहीं देखा जाता, उनका महत्व तो प्रभाव और प्रतिभा से ही आंका जा सकता है । सदियों पुरानी हमारी यह मान्यता हमें सिखाती है कि प्रतिभा और पराक्रम को प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए ।प्रतिभा हमारे राष्ट्र की पूँजी है और हर प्रतिभा को संरक्षित–सुरक्षित रखना हर राष्ट्रवादियों की जिम्मेवारी है । प्रतिभा का अवनति होना कहीं न कहीं राष्ट्र के पतन की निषानी होगी । प्रतिभावान लोगों का सम्मान करते हुए नई प्रतिभा को जगाना, बढ़ाना और उसे भी संरक्षित–सुरक्षित रखने का भाव हर नागरिक के मन के अंदर पैदा करनेकी जिम्मेवारी हम सबों की होनी चाहिये । माँ भारती की धरती पर जिसने भी जन्म लिया है, वह चाहे किसी जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा या लिंग का हो,उसके प्रति समभाव पैदा करना सबका साथ, सबका विकास और सबके विश्वास के मूलमंत्र पर खरा उतरना हम सभी जनप्रतिनिधियों तथा बुद्धिजीवियों की सामूहिक जिम्मेवारी है । हम विकारों से मुक्त होकर, अधिकारों के प्रति लोक भावना जगाने से ज्यादा कर्त्तव्य बोध की प्रेरणा जन–जन में भरें, यह समय की माँग है । ताकि कर्त्तव्य करने वाले लोग परिवार के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के

प्रति जो उभरकर–निखरकर आयेंगे । हमारी सामाजिक, राजनीतिक पथ–प्रदर्शक बनेंगे । ये वातावरण बनाना हम सबों की जिम्मेवारी है ।

अतः प्रतिभा का सम्मान राष्ट्र के उत्थान की दिषा में किये जाने वाले प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए । प्रतिभा और पुरुषार्थ के प्रति हमारी कृतज्ञता हमें यह सोचना भी सिखाती है कि कोई प्रतिभा अवसर के लाभ से वंचित रहकर हाषिये पर न रह जाय । उसे 'अवसर की समानता' का संविधान सम्मत मौलिक अधिकार मिले यह हमारा सामाजिक और नैतिक दायित्व है । 'अभिभावक विहीन' बच्चों को अभिभावक की छत्रछाया मिले और जैविक कारणों से संतानहीन रह गए दंपत्ति को बच्चे का सुख मिले इस ध्येय के साथ हमें प्रतिभा को ममता का आँचल उपलब्ध कराना है ।

कालचक्र में ऐसी घटनाएँ होती हैं जो बच्चों से उनके माता–पिता और माता–पिता से उनके बच्चों को छीन लेती हैं । कोरोना के वैष्विक महामारी के दौर में ऐसे अनेक उदाहरण सामने आए हैं । इसके साथ ही लोकलज्जा एवं अन्य कारणों से जन्म के साथ ही षिषुओं के परित्याग के दुखद समाचार अक्सर सुनने को मिलते हैं । दूसरी ओर संतान न होने के कारण अवसाद व आत्महत्या जैसी अप्रिय घटनाएँ होती हैं, जबकि परमात्मा की कृपा से प्राप्त मानव जीवन संपूर्ण सृष्टि के कल्याण में योगदान के लिए होता है ।

जरा विचार करें यदि योग्यता को समुचित अवसर मिल जाय और संतानविहीन लोगों को योग्य संतान मिल जाय तो समाज का कितना बड़ा कल्याण हो जाय ? अवसर से अच्छादित प्रतिभाषाली और परिश्रमी युवा हमारे भविष्य के वाहक हैं, ये अपने ज्ञान और कौषल से जब आगे बढ़ेंगे तो हमारा देष और समाज आगे बढ़ेगा । वे न केवल अपने अभिभावक का नाम और मान बढ़ाएँगे । ये काल की क्रूरता के कारण संतान से वंचित रह गए अपने अभिभावकों के लिए बुढ़ापे का सहारा तो बनेंगे ही, वृद्धावस्था और एकाकीपन से जूझते एक बड़े तबके के लिए उम्मीद की किरण बनकर भी उभरेंगे । बदलते दौर की जिस दहलीज पर हम खड़े हैं, वहाँ यह सवाल भी हमें करना होगा कि जिस देष और समाज में प्रतिभा को संवारने की एक सामाजिक परंपरा रही है, वहाँ यह परंपरा टूट सी क्यों गई है? हमारे राज–समाज के रहनुमा अपने विकास में इतने लीन क्यों होते चले गए कि पग–पग पर कुम्हलाती प्रतिभाओं की सिसकियाँ उनके कानों तक नहीं पहुँच पा रहीं ? इन यक्ष प्रष्नों की कसौटी पर आज हमें अपने नीति–निर्धारकों को भी तौलना होगा । हमें अपनी सुविधा, अपने सामर्थ्य और अपनी समृद्धि का कुछ अंष अनाथ और अभिभावक विहीन बाल–युवा शक्ति के सरोकार में भी समर्पित करना होगा । यदि आज अभिभावक विहीन बच्चों के हम संरक्षक नहीं बनेंगे तो वही कल असामाजिक तत्वों के हाथों पड़कर समाज के लिए अभिशाप बन जायेंगे । जो हमारे समाज और राष्ट्र के लिए बड़ा नुकसानदेह होगा । हम सब मिलकर इन्हें अभिशाप नहीं समाज के लिए वरदान बनाने का प्रयास करें ताकि ये सामाजिक योद्धा के रूप में समाज और राष्ट्र के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बनकर उभर सकें ।

इस सोच को संकल्प में बदल कर, आदर्ष को आदत बनाकर और अभियान को आंदोलन में परिवर्तित कर हम स्वर्णिम भारत के अपने साध्य को सिद्धि तक पहुँचा

सकेंगे । यह अभियान मानवता के भाव को जागृत कर उसे व्यवहार में उतारने के संकल्प को साकार करेगा । यह सामाजिक बदलाव के लिए व्यापक आधारभूमि प्रदान करेगा । हम सबके सहयोग और सद्भाव से यह अभियान 21वीं सदी में भारत के विष्वगुरू बनने के स्वामी विवेकानंद की भविष्यवाणी को सत्य प्रमाणित करने में बड़ा योगदान देगा ।

आइये हम सब संकल्प लें तथा अपने सहयोग, सामर्थ्य और सहकार से यह स्वप्न साकार करें :–

हम भारत माता की संतान, आओ मिलकर करें निर्माण,
दीप से दीप जलायें, आओ मिलकर कदम बढ़ायें।
संकल्प अडिग, लक्ष्य पूर्ण, हम सब हाथ से हाथ मिलायें,
आओ मिलकर 21वीं सदी का राष्ट्र बनायें।।

सत्रहवीं विधान सभा की अब तक की उपलब्धियाँ

- सदन में 51 वर्ष के बाद बिहार विधान सभा अध्यक्ष का चुनाव हुआ, जिसमें सबसे कम उम्र के विधान सभा अध्यक्ष के रूप में श्री विजय कुमार सिन्हा का निर्वाचन हुआ ।
- पक्ष–प्रतिपक्ष के संख्या बल में बहुत कम अंतर के बावजूद लगभग शत–प्रतिशत सदन चला और सभी सत्रों के दौरान लगभग शत–प्रतिशत प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए । यह सभी के सकारात्मक सहयोग और रचनात्मक सोच को दर्शाता है । इससे सदन की गरिमा बढ़ी है।
- सदन की कार्यवाही को जनोन्मुखी बनाने के लिए पहली बार यू ट्यूब चैनल पर ऑन लाईन प्रसारित किया गया।
- बजट सत्र के समापन पर उत्साहपूर्वक पहली बार बसंतोत्सव का आयोजन हुआ और यह क्रम जारी है ।
- दिनांक 21.10.2021 को बिहार विधान सभा भवन शताब्दी वर्ष समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद पधारे ।
- इस समारोह के शुरू होने के पूर्व भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद द्वारा दिनांक 21.10.2021 को बिहार विधान सभा परिसर में बोधगया से लाये गये बोधिवृक्ष के शिशु पौधे का रोपण किया गया ।
- इस समारोह के शुरू होने के पूर्व भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद द्वारा दिनांक 21.10.2021 को बिहार विधान सभा परिसर में शताब्दी स्मृति स्तंभ का शिलान्यास किया गया ।
- दिनांक 21.10.2021 को इस समारोह के दौरान भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद द्वारा 'पाँच सामाजिक संकल्पों का अभियान–मुक्त, युक्त और सम्मान कार्यक्रम' (हमारा परिवार पॉच सामाजिक अभिशापों से मुक्त–नशामुक्त, अपराध मुक्त, बाल

श्रम मुक्त, बाल विवाह मुक्त और दहेज मुक्त, हमारा परिवार पॉच सामाजिक वरदानों से युक्त– स्वच्छतायुक्त, योग आयुर्वेद युक्त, जल संचय युक्त, प्रकृति युक्त और विरासत युक्त, हमारा परिवार पॉच सामाजिक सम्मानों से पूर्ण–डिजिटल साक्षर, स्वरोजगार प्रेरक, रोजगार सृजनकर्त्ता, सामाजिक योद्धा और सेवा समर्पणदाता) का उद्घाटन किया गया ।

- दिनांक 21.10.2021 को इस समारोह के दौरान बिहार विधान सभा की एक स्मारिका का भी विमोचन हुआ ।
- 'पॉच सामाजिक संकल्पों का अभियान–मुक्त, युक्त और सम्मान कार्यक्रम' से संबंधित पुस्तिका मुद्रित करायी गयी ।
- दिनांक 21.10.21 को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी के सम्मान में अध्यक्ष, बिहार के सरकारी आवास 02, देशरत्न मार्ग, पटना में रात्रि भोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।
- बिहार विधान सभा के माननीय सदस्यों के लिए दिनांक 17 फरवरी, 2022 को एक प्रबोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लोकसभा के माननीय अध्यक्ष सहित कई गणमान्य महानुभावों ने अपने अनुभवों तथा विचारों से हमें अवगत करा कर हमारा मार्गदर्शन किया।
- 17 फरवरी, 2022 को माननीय लोकसभाध्यक्ष श्री ओम बिरला जी के कर कमलों से बिहार विधान सभा की त्रैमासिक पत्रिका 'विधान प्रबोधिनी'' का लोकार्पण किया गया।
- 17 फरवरी, 2022 को माननीय लोक सभाध्यक्ष श्री ओम बिरला जी के कर कमलों से 'बिहार विधान सभा टीवी' का उद्घाटन किया गया ।
- बिहार विधान सभा सचिवालय द्वारा माननीय सदस्यों के निजी सहायकों के लिए एक प्रशिक्षणशाला का आयोजन दिनांक 18 फरवरी, 2022 को किया गया । इससे माननीय सदस्यों को संसदीय कार्यों सहित अन्य कार्यों के निष्पादन में सहुलियत होगी ।
- दिनांक 26 मार्च, 2022 को सदन में 'संवैधानिक अधिकार एवं कर्त्तव्य के प्रति जागरूकता' विषय पर दो घंटे की हुई चर्चा के बाद सदन में सभी माननीय सदस्यों को 'भारत के संविधान की मूल प्रतिलिपि' उपलब्ध करायी गयी । साथ ही सभी माननीय सदस्यों से इसके अध्ययन का अनुरोध भी किया गया ।
- दिनांक– 24 जून, 2022 से 30 जून, 2022 तक चले मानसून सत्र के दौरान उत्कृष्ट विधायक और उत्कृष्ट विधान सभा के चयन के स्वरूप निर्धारण हेतु सदन में विशेष चर्चा हुई ।
- मानसून सत्र के दौरान माननीय सदस्यों को सुचारू रूप से संसदीय तथा क्षेत्रीय दायित्वों के निर्वहन हेतु उनसे संबंधित जिला समाहरणालय तथा प्रखण्ड विकास पदाधिकारी कार्यालय में एक–एक कक्ष कर्णांकित कराये जाने की आसन से घोषणा की गई ।

- दिनांक– 21 जून, 2022 को विश्व योग दिवस के अवसर पर बिहार विधान सभा परिसर में पहली बार योगाभ्यास शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बिहार मंत्रिपरिषद के सदस्यों, बिहार विधान मंडल के सदस्यों/पूर्व सदस्यों सहित बड़ी संख्या में सभा सचिवालय के पदाधिकारी/कर्मचारी शामिल हुये ।
- दिनांक– 16 जून, 2022 को **''तनाव मुक्त जीवन जीने की कला''** विषय पर बिहार विधान सभा के सेंट्रल हॉल में ब्रह्मकुमारी प्रजापिता ईश्वरीय विश्वविद्यालय की राजयोगिनी ऊषा दीदी का संबोधन हुआ जिसमें बिहार विधान मंडल के माननीय सदस्यगण सहित बड़ी संख्या में सभा सचिवालय के पदाधिकारी/कर्मचारी शामिल हुये ।
- बिहार विधान सभा सचिवालय में अवस्थित पुस्तकालय राज्य के लब्ध प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में से एक है, जिसमें पहली बार सरस्वती पूजन आरंभ किया गया और माता सरस्वती की प्रतिमा स्थापित की गयी ।
- मकर संक्रांति में प्रसाद वितरण कार्यक्रम सपंन्न हुआ, जिसमें पत्रकारगण सहित सभा सचिवालय के पदाधिकरी/कर्मचारीगण शामिल हुए तथा बिहार विधान सभा में सरस्वती पुत्र पत्रकारों को पहली बार सम्मानित किया गया ।
- माननीय सदस्य को Onlineप्रश्न भेजने तथा जबाव देने के लिए उत्साहित करने के लिए विशेष रूप से Help Deskऔर प्रशिक्षण गाईड की व्यवस्था की गयी। बिहार विधान सभाके प्रश्न से संबंधित पाँच वर्गों में सभी विभागों के Monitoring के लिए एक टीम बनाकर नयी प्रणाली विकसित की गयी।
- बिहार विधान सभा के माननीय सदस्यगण/ पूर्व सदस्यगण के मेडिकल बिल भुगतान की प्रक्रिया को सरल किया गया, जिससे उन्हें चिकित्सा प्रतिपूर्त्ति में सहूलियत हो रही है ।
- माननीय सदस्यों द्वारा धारित एक से अधिक मोबाईल के बिल के भुगतान करने का निर्णय किया गया ।
- बिहार विधान सभा की पहल पर राज्य सरकार द्वारा माननीय विधायकों के प्रोटोकॉल और सम्मान से संबंधित दिशानिर्देश सभी डीएम/एसपी को पहल कर सरकार द्वारा पत्र भेजवाया गया है तथा हर हाल में उनके साथ तय प्रोटोकॉल के पालन को सुनिश्चित करने का निदेश दिया गया ।
- विधान सभा में व्यवस्था परिवर्तन के तहत सत्र के दौरान माननीय सदस्यों के साथ आने वाले गार्ड/ड्राईवर आदि के लिए शौचालय पेयजल तथा कैंटीन की व्यवस्था की गयी ।
- बिहार विधान सभा भवन शताब्दी वर्ष का शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के कर कमलों द्वारा किया गया, जिसमें तत्कालीन माननीय केंद्रीय कानून मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद और राज्य सभा के माननीय सांसद श्री सुशील मोदी के द्वारा विधायिका प्रबोधन कार्यक्रम के दौरान संविधान की मूल प्रति से पहली बार अवगत कराया गया और इसमें निहित रामायण, महाभारत, गीता, सिख, बौद्ध, जैन धर्मों के चित्रों का अवलोकन किया गया। इसी कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष, बिहार विधान सभा द्वारा पाँच सामाजिक

अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त और पाँच सामाजिक सम्मानों से पूर्ण सामाजिक–नैतिक संकल्प अभियान की प्रासंगिकता पर चर्चा की गई ।

- बिहार विधान सभा के माननीय एवं पूर्व माननीय सदस्यों को उनके जन्मदिन पर शुभकामना संदेश भेजने की शुरूआत की गयी ।
- प्रेस सलाहकार समिति में Print /Electronic MediaऔरSocial Mediaके वेब पोर्टलको भी बैठक का स्थान दिया गया।
- बजट सत्र के दौरान महिला दिवस के मौके पर आसन द्वारा संबोधित किया गया और सभी महिला सदस्यों को विधायी कार्य में प्राथमिकता दी गई तथा आसन पर भी अध्यासी सदस्यों के रूप में महिला सदस्यों ने अपनी जिम्मेवारी बखूबी संभाली ।
- शून्यकालके दौरान माननीय सदस्यों को अधिक से अधिक संख्या में लोकहित की सूचना देने का मौका दिया गया ।
- सदन में अच्छे कार्य करने वाले माननीय सदस्यों को प्रोत्साहित करने का भी प्रभाव पड़ा। सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सदन की कार्यवाही में भाग लिया, माहौल सकारात्मक रहा, जिससे अधिकाधिक जनसमस्याओं को दूर करने का अवसर मिला ।
- लोकसभा अध्यक्ष की पहल पर कोरोना के पहले दौर से ही सभा सचिवालय में कोरोना नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया। कोरोना की दूसरी लहर में राज्य सरकार के निर्णय से पहले ही सभा सचिवालय को मई में बंद कर दिया गया। इसके पहले अप्रैल में भी 7 दिन सभा सचिवालय बंद किया गया।
- बिहार विधान सभा के वर्तमान एवं पूर्व सदस्यों, सभा सचिवालय में कार्यरत कर्मियों तथा इनके परिजनों और सभा सचिवालय के सेवा निवृत्त परिजनों के लिए टीकाकरण की व्यवस्था की गयी।
- 05 जून, 2021 को विधान सभा परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पीपल, बरगद, नीम, आंवला और आम आदि पौधे लगाकर पर्यावरण सरंक्षण के लिए अधिकाधिक वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण की अपील माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा की गयी ।
- एक और घोषणा की गयी, कि जो भी माननीय सदस्य अपने प्रश्न के उत्तर के संदर्भ में यह प्रतिवाद करते हैं कि विभागीय उत्तर से इतर है या गलत है तो इसकी सूचना सभा सचिवालय को दे सकते हैं । सूचना प्राप्त होने पर इसे बिहार विधन सभा की प्रश्न एवं ध्यानाकर्षण समिति को समीक्षा हेतु भेज दिया जायेगा ।
- सुरक्षा की दृष्टि से बिहार विधान सभा परिसर के चारों ओर छह वाचटावर का निर्माण कराए जाने का निर्णय लिया गया ।
- अखिल भारतीय पीठासीन पदाधिकारियों की बैठक के सौ वर्ष पूरे होने पर दिनांक 15.09. 2021 को आयोजित अखिल भारतीय पीठासीन पदाधिकारियों की बैठक में वर्चुअल माध्यम से जुड़कर उसे संबोधित किया तथा इसके 83वें सम्मेलन की मेजबानी बिहार को देने की

माँग की । इस दौरान सभी महानुभावों को बिहार की बौद्धिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा राजनीतिक विरासत को समझने के लिए बिहार आने का आमंत्रण दिया ।

- इस समारोह में आये बिहार विधानमंडल के सभी पूर्व और वर्तमान माननीय सदस्यों, बिहार से लोकसभा तथा राज्यसभा के सभी पूर्व तथा वर्तमान माननीय सदस्यों को उपहारस्वरूप स्मारिका तथा 'पाँच सामाजिक संकल्पों का अभियान–मुक्त, युक्त और सम्मान कार्यक्रम' से संबंधित पुस्तिका और एक सूटकेस भेंट किया गया ।
- शिमला में आयोजित अखिल भारतीय पीठासीन पदाधिकारियों के शताब्दी वर्ष समारोह तथा इसके 83वें सम्मेलन में भाग लिया और इसमें नैतिक संकल्प अभियान की चर्चा की, जिसे वहाँ पारित 11 संकल्पों में स्थान मिला और तय हुआ कि नैतिक संकल्प के लिये जनजागरूकता अभियान चलाया जाय ।
- दिनांक 22.11.2021 को बिहार के माननीय उप मुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद जी ने 05, देशरत्न मार्ग, पटना स्थित अपने सरकारी आवास पर सपरिवार सामाजिक संकल्प अभियान से संबंधित शपथ लिया ।
- दिनांक 25.11.2021 को सीवान जिला में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जन्मभूमि जीरादेई में जिले के प्रभारी मंत्री सहित सीवान जिला से सभी माननीय विधायकगणों तथा पूर्व विधायकगणों ने सामाजिक संकल्प से संबंधित शपथ ली ।
- दिनांक 25.11.2021 को सीवान जिला के टाउन हॉल में युवा संसद का आयोजन किया गया जहाँ सीवान जिला के विभिन्न स्कूलों के चयनित बच्चों ने भाग लिया तथा 'हमारा संवैधानिक अधिकार तथा संवैधानिक कर्त्तव्य' पर वाद–विवाद किया ।
- दिनांक 25.11.2021 को सीवान में जनप्रतिनिधियों के साथ विशेषाधिकार तथा नयाचार पर स्थानीय पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की तथा माननीय सदस्यों के प्रति निर्धारित प्रोटोकॉल का हर हाल में पालन करने का निदेश दिया ।
- 29 नवम्बर, 2021 से 03 दिसंबर, 2021 तक चले सप्तदश बिहार विधान सभा के चतुर्थ सत्र के दौरान पहली बार जीत कर आये बिहार विधान सभा के माननीय सदस्यों को सदन की सहमति से प्रश्नकाल के दौरान क्रम तोड़कर प्रश्न पूछने की पहल की, जिससे संसदीय कार्यों, खासकर प्रश्न पूछने में उनकी जिज्ञासा बढ़ी और सरकार को भी सभी प्रश्नों की तैयारी करने के लिए सतर्क रहना पड़ा ।
- 29 नवम्बर, 2021 से 03 दिसंबर, 2021 तक चले सप्तदश बिहार विधान सभा के चतुर्थ सत्र के दौरान बिहार विधान सभा के एक माननीय सदस्य के अल्पसूचित प्रश्न पर सदन की एक विशेष समिति का गठन किया ।
- बिहार विधान सभा सचिवालय में पहली बार आई.टी. सेल का गठन किया । इसका उद्देश्य बिहार विधान सभा की महत्वपूर्ण गतिविधियों को त्वरित ढंग से जनता के बीच पहुँचाना है ।

- सप्तदश बिहार विधान सभा के चतुर्थ सत्र के दौरान सिवान जिला के विभिन्न स्कूलों के उन बच्चों को सदन की कार्यवाही दिखाई गई जिन्होंने सिवान में आयोजित युवा संसद कार्यक्रम में भागीदारी की थी ।
- गणतंत्र की जननी वैशाली में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी । इस कार्यक्रम में भारत सरकार के केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री आदरणीय श्री नित्यानंद राय जी द्वारा सहृदयता से भाग लिया गया ।
- स्वतंत्रता के पूर्व बिहार प्रांत के प्रथम प्रधानमंत्री तथा आजादी के बाद अखण्ड बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री बिहार केसरी श्री कृष्ण सिंह 'श्री बाबू' की जन्मस्थली शेखपुरा के जिला मुख्यालय में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।
- मिथिलांचल की धरती दरभंगा में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।
- माननीय सदस्यों तथा पूर्व सदस्यों के चिकित्सा विपत्रों की प्रक्रिया को सरल करने के लिए 01 मार्च, 2022 से प्रायोगिक तौर पर डिजिटल प्लेटफॉर्म की शुरूआत की जा रही है, जिसके सफल होने पर इसकी शुरूआत अगले वित्तीय वर्ष से की जायेगी ।
- माननीय सदस्यों तथा पूर्व सदस्यों के चिकित्सा विपत्रों की शीघ्र भुगतान एवं अन्य विपत्रों के भुगतान में शीघ्रता के लिए वित्त विभाग, बिहार सरकार से एक आंतरिक सलाहकार की प्रतिनियुक्ति करायी जा रही है ।
- बिहार विधान मंडल परिसर के मुख्य द्वार पर आगंतुकों के लिए एक स्वागत कक्ष का निर्माण कराया गया, जिसका उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा दिनांक 07 मार्च, 2022 को किया गया । इसके सटे ही आगत अतिथियों एवं महानुभावों के लिए एक सुसज्जित कक्ष के निर्माण की कार्रवाई भी प्रारंभ हो चुकी है ।
- महर्षि विश्वामित्र की तपोभूमि एवं भगवान श्री राम की प्रशिक्षण स्थली बक्सर में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।
- मोक्ष नगरी गया में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक

अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।

- महर्षि बाल्मिकी की तपोभूमि, पंडित राजकुमार शुक्ल की जन्मभूमि एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की कर्मभूमि पश्चिमी चंपारण (बेतिया) में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।

- माता पूरण देवी की पावन धरती – पूर्णिया में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।

- पूर्णिया की इस यात्रा के दौरान बिहार विधान सभा के पूर्व माननीय अध्यक्ष स्व० लक्ष्मीनारायण सुधांशु जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उनके परिजनों से मुलाकात की । सुधांशु जी बिहार की समृद्ध बौद्धिक विरासत के अंग हैं ।

- अंगराज कर्ण की भूमि, तंत्र और ज्ञान की पीठ रही विक्रमशिला विश्वविद्यालय की धरती भागलपुर में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।

- भागलपुर की इस यात्रा के दौरान बिहार विधान सभा के पूर्व माननीय अध्यक्ष स्व० शिव चन्द्र झा जी के तैल चित्र पर माल्यार्पण किया और उनके आवास पर जाकर उनके परिजनों से मुलाकात की । झा जी बिहार की समृद्ध बौद्धिक विरासत के महत्वपूर्ण अंग हैं ।

- माँ उग्रतारा, रक्तकाली और मत्स्यगंधा की पावन धरती, मंडन मिश्र तथा विदुषी भारती की भाव भूमि सहरसा में बाल एवं युवा संसद का आयोजन किया गया तथा वहाँ के जनप्रतिनिधियों को सामाजिक एवं नैतिक संकल्प अभियान के तहत पाँच सामाजिक अभिशापों से मुक्त, पाँच वरदानों से युक्त एवं पाँच सम्मानों से पूर्ण परिवार को शपथ दिलाई गयी ।

- बिहार विधान सभा भवन के शताब्दी वर्ष में बिहार विधान सभा के ऐतिहासिक विधायी सफर का संकलन तैयार कराया जा रहा है ।

- दिनांक–12 जुलाई, 2022 को बिहार विधान सभा के लिए एक अविस्मरणीय दिन है, जब इस परिसर में भारत के किसी माननीय प्रधान मंत्री महोदय का आगमन हुआ। बिहार विधान सभा परिवार माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है और उनका स्वागत करता है ।

- मान्नीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर–कमलों से शताब्दी स्मृति स्तंभ का अनावरण एवं लोकार्पण हुआ। यह स्तंभ 25 फीट उंचा और अष्टकोणीय है। इसमें कुल सौ पट्टिकायें हैं जो विधान सभा भवन के सौ वर्ष पूरे होने का संकेत हैं । इस स्तंभ के उपर मेटल का बना बोधि वृक्ष है, जिसकी उंचाई 15 फीट है । इसमें कुल 9 मुख्य डालियाँ हैं जो बिहार के 9 प्रमंडलों को इंगित कर रही हैं तथा इसमें 38 शाखायें हैं जो बिहार के 38 जिलों की प्रतीक है । इसका निर्माण विधान सभा भवन के सौ वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में कराया गया है । यह बिहार की समृद्ध धरोहर बनेगा ।
- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से बिहार विधान सभा संग्रहालय का शिलान्यास किया गया है । इस संग्रहालय में बिहार विधायिका के अबतक के समृद्धशाली इतिहास और परंपरा को संजोया जायेगा ताकि भावी पीढ़ियॉ उससे अवगत हो सकें ।
- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों द्वारा बिहार विधान सभा के सुसज्जित आधुनिक अतिथिशाला का शिलान्यास किया गया है । इसके निर्माण से बिहार विधान सभा को एक महत्वपूर्ण आवासीय सुविधा उपलब्ध हो जायेगी, जिसका इस्तेमाल बिहार विधान सभा के अतिथिगण तथा अन्य स्थल अध्ययन यात्रा पर बिहार आने वाली अन्य राज्यों की विधान सभाओं की समितियों द्वारा किया जायेगा ।
- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से विधान सभा परिसर के जिस भाग में कल्पतरू पौधे का रोपण किया गया है, उनके द्वारा उसका नामकरण 'शताब्दी स्मृति उद्यान' के रूप में किया गया है ।
- 'शताब्दी स्मृति उद्यान' में सौ प्रकार के औषधीय पौधों का रोपण किया गया है। यह उद्यान हमें सदियों पुराने अपनी परंपरा और प्रकृति से जोड़ेगा ।

******